वैश्विक सन्दर्भ में हिंदी भाषा

डॉ. मलकीत सिंह
अध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिंदी विभाग,
श्री गुरु तेग बहादुर खालसा कॉलेज,
श्री आनंदपुर साहिब

मेरा दुर्लभ देश आज यदि अवनति से आक्रान्त हुआ,
अंधकार में मार्ग भूल कर भटक रहा है भ्रांत हुआ।
तो भी भय की बात नहीं है भाषा पार लगावेगी,
अपने मधुर स्निग्ध नाद से उन्नत भाव ज्गावेगी।

"गुप्त"

आज से अनेकों दशक पूर्व मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित यह पंक्तियाँ कहीं न कहीं आज यथार्थ सिद्ध होती प्रतीत हो रही हैं, जिसके अनेक कारण हैं। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि आधुनिकता की इस अंधी दौड़ में जहाँ एक ओर भूमंडलीकरण से सम्पूर्ण विश्व एक गाँव बनता जा रहा है उसी के साथ-साथ देश की उन्नति-अवनति भी इससे प्रभावित होती स्पष्ट दिखाई देती है। जहाँ एक ओर बहुराष्ट्रीय कंपनियों के आगमन ने अनेक छोटे उद्योग चौपट कर के रख दिया है, उसी के साथ-साथ भाषा को भी प्रभावित किया है।

भूमंडलीकरण के इस दौर में बाज़ार संस्कृति का बोलबाला है इसने हमारे खानपान-पहनावे यहाँ तक की भाषा को भी बेहद गहरे स्तर तक अस्त व्यस्त किया है और हिंदी भाषा भी इससे अछूती न रह पायी। यहाँ एक ओर भूमंडलीकरण ने हिन्दी भाषा के प्रचार प्रसार में योगदान दिया है वहीं दूसरी ओर उसके दुष्प्रभाव भी नज़र आते हैं आज की हिन्दी भाषा में फ़िल्मी शब्दावली झलकती है जो हिन्दी की परम्परा से दूर जाने का प्रारम्भ है।

प्रत्येक देश को दृढ बनाने में एक भाषा का होना अनिवार्य है जिसे सम्पूर्ण राष्ट्र समझता हो और हिंदी ऐसी भाषा है जिसे सम्पूर्ण राष्ट्र के साथ-साथ विदेशों में भी पढ़ा-पढ़ाया जा रहा है जो हिन्दी के वैश्विक परिदृश्य का उपयुक्त उदहारण है।

वैश्विक पटल पर भाषा का स्थापित होना अपने आप में एक चुनौती है। हिंदी भाषा ने अनेकों वर्षों से इस चुनौती का सामना किया है । हिन्दी प्रेमियों के कारण ही आज हिन्दी विश्व पटल पर अपने अस्तित्व को स्थापित कर पायी है हालाँकि अनेक प्रश्न उठाये जाते हैं कि जब भारत में पूर्ण रूप से हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा नहीं मिला पाया तो अन्य देशों में यह अपना वर्चस्व कैसे स्थापित कर पाएगी? इसका उत्तर एक ही पंक्ति में दिया जा सकता है कि इतिहास साक्षी है कि जब भी कोई मुद्दा उठता है तो कुछ लोग उसके पक्ष में आ जाते हैं तो कुछ उसके विपक्ष में। इसी तरह ऐसा संभव नहीं है कि प्रत्येक भारतीय अपनी राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी को स्वीकार करे। किन्तु फिर भी हम आज देखते हैं कि विश्व के माथे पर हिन्दी स्वर्ण बिंदी की तरह चमक रही उसके अनेक कारण है जिनमें से एक है 'विश्व बाज़ार की आवश्यकता।' किन्तु धीरे-धीरे हिंदी विश्व भाषा का रूप ग्रहण करने के पथ पर अग्रसर हो चुकी है। प्रो. विद्यानिवास मिश्र अपने आलेख 'विश्व हिंदी' के अंतर्गत विश्व भाषा पर विचार करते लिखते हैं, "विश्वभाषा की तीन अपेक्षाएँ होती है- पहली तो इसमें बोलने समझने वालों का विस्तृत भौगोलिक वितरण। आज भारत के बाहर नेपाल, भूटान, सिंगापुर, मलेशिया, थाईलैंड, हांगकांग, फिजी, मॉरिशस, त्रिनिदाद, गयाना, सूरीनाम, इंग्लैंड, कनाडा और संयुक्त राज्य अमेरिका में हिंदी भाषी प्रचुर संख्या में है। वैसे हिंदी समझने वाले और भी अधिक देशों में हैं। हिंदी भाषी यूरोप के अनेक देशों में पश्चिम एशिया के देशों में अब बस गए हैं। ये सभी हिंदी भाषा में प्रयोक्ता द्वि-भाषाभाषी या त्रिभाषा-बहसभाषी होते हुए भी हिंदी में अपनी निजी पहचान रखते हैं।"[1]

इस प्रकार देखा जाये तो भौगोलिक प्रचार प्रसार के आधार पर तो हिंदी भाषा अपने पांव विश्व पटल पर फैला चुकी है। जो पहले मेरठ के आस पास की बोली को ही हिंदी भाषा का

दर्जा प्राप्त था, आज उसकी सीमाएं टूट गयी हैं, इसके सशक्त उदाहरण हमारे सामने मौजूद हैं। वैश्विक स्तर पर अपने अस्तित्व को कायम रख पाने में सबसे बड़ी भूमिका भूमंडलीकरण की है, जिसने सम्पूर्ण विश्व को एक गाँव के रूप में समेट दिया। अंतरजाल का साथ इस प्रसार में बेहद महत्वपूर्ण रहा है। जिसके फलस्वरूप हिंदी आज संपर्क भाषा का कार्य कर रही है।

बाज़ार में हिंदी की स्थिति का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि आज प्रत्येक बहुराष्ट्रीय कंपनी अपनी वेबसाइट को हिंदी में भी लांच कर रही हैं, जिससे उनकी मार्किट तो बढ़ती ही है साथ ही साथ हिंदी में रोज़गार का अवसर भी बढ़ता है। इस प्रकार विदेशी धरती पर अपने महत्व का पर्चम हिंदी भाषा धीरे-धीरे फैला रही है क्योंकि भारत एक बहुत बड़ा बाज़ार है इसलिए यहाँ व्यापर करने के लिए विदेशी लोगों को यहाँ की स्थानीय भाषा को सीखना अनिवार्य है। इसलिए आज अनेक देशों में हिंदी सीखना उनकी मज़बूरी भी बन गया है। प्रो. इन्द्रनाथ चौधरी अपने आलेख 'हिंदी की संस्कृति और उसका विश्वरूप' के अंतर्गत लिखते हैं, "हिंदी विश्व बाज़ार में प्रभावशाली भाषा उभर रही है। इस बाजार के लिए विश्व की सबसे बड़ी कंपनियाँ हिंदी को ध्यान में रखकर सुविधाएँ विकसित कर रही हैं। वैश्वीकरण का मूलमंत्र है, नफा कमाना। कॉपरेट संस्थाएँ अब समझ गई हैं कि व्यापार में नफा के लिए भारत में अपने व्यवसाय के प्रसार के लिए हिंदी का प्रयोग जरुरी है। कंप्यूटर प्रोग्रामिंग के जानकारों का मानना है कि कंप्यूटिंग लैंग्वेज के लिए संस्कृत/हिंदी एक अनुकूल भाषा है। देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता भी सराही जाती है आज विदेशों में हिंदी सीखनेवालों की संख्या तेज़ी से बढ़ रही है।"[2]

मनुष्य की प्रवृति है कि वह प्रत्येक कार्य में अपना मुनाफा तथा नुकसान अवश्य देखता है, आज विदेशों में हिंदी भाषा को भी अपने मुनाफे के लिए पढ़ा जा रहा है, यह अलग बात है किन्तु इस बात से भी मुंह नही मोड़ा जा सकता कि इसके कारण हिन्दी का प्रचार प्रसार भी बढ़ रहा है।

अगर हिंदी के विस्तृत फलक पर दृष्टि डालें तो सामने आता है कि प्रारंभ से ही भारतीय विद्वानों के साथ साथ विदेशी विद्वानों द्वारा भी हिंदी के उत्थान में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया जाता रहा है, जिसका उदाहरण है शुरूआती समय में विदेशी विद्वानों द्वारा हिंदी साहित्य तथा भाषा का इतिहास लिखना वो भी तब जब हिंदी का साहित्य इधर उधर बिखरा पड़ा था और यह परिपाटी यूँ ही चलती रही। आज भी ऐसे अनेक विदेशी विद्वान हैं जो हिंदी को वैश्विक पटल पर स्थापित करने में अपना अतुलनीय योगदान दे रहे हैं। विभिन्न देशों के विश्वविद्यालयों का हिंदी पाठ्यक्रम को लागू करना अपने आप में हिंदी के महत्व को सिद्ध करता है। डॉ. वासुदेव का कहना है कि अमेरिका, कनाडा, रूस, ब्रिटेन, फ्रांस, होलैंड, स्वीटजरलैंड, डेनमार्क,नार्वे, स्वीडन, इटली, पोलैंड, दक्षिण अमेरिका, जापान,ऑस्ट्रेलिया, चीन इत्यादि देशों में हिंदी पढाई जाती है।"[3]

विश्व में हिंदी भाषा जानने वालों की संख्या की बात करें तो वह करोड़ों में है। डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय अपनी पुस्तक 'हिंदी का विश्व सन्दर्भ' में आंकड़े को आधार पर सिद्ध करते हैं कि आने वाले समय में हिंदी को जानते तथा पढ़ने वालों की संख्या में भारी बढ़ोतरी होगी। उनके द्वारा 40 देशों का आंकड़ा दिया गया है जिसी 18.9 प्रतिशत जनता हिंदी भाषा जानती है। जिसमें विश्व की अमीर अर्थव्यवस्था वाले देश जैसे अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन इत्यादि भी शामिल हैं। हिंदी भाषा के भविष्य को लेकर उनका मानना है कि "हिन्दी जिस गति तथा आंतरिक उर्जा के साथ अग्रसर है उसे देखकर यही कहा जा सकता है कि सन 2020 तक वह दुनिया की सबसे ज्यादा बोली व समझी जाने वाली भाषा बन जाएगी।"[4]

हिन्दी भाषा तथा साहित्यकारों के हिन्दी भाषा के प्रचार प्रसार को लेकर जो सकारात्मक विचार हैं उससे एक उम्मीद बंध जाती है कि आने वाला समय हिन्दी प्रेमियों के लिए और भी सुखद रहेगा।अंतर्राष्ट्रीय पटल पर जब विविध क्षेत्रों के साथ-साथ राजनीतिक,

सांस्कृतिक सम्मेलनों पर नज़र डाली जाए तो सामने आता है कि हमारे नेता आज विभिन्न देशों में जाकर हिंदी में भाषण देते है, यह हिन्दी के प्रचार की ओर ही एक कदम है।

गिरिराज किशोर अपनी पुस्तक 'देखो जग बौराना' में 'बाहर सम्मान, यहाँ उपेक्षा' शीर्षक के अंतर्गत हिन्दी की वर्तमान स्थिति पर विचार करते लिखते हैं, "हाल ही कई देशों की यात्रा के दौरान मैंने देखा कि वहाँ विश्वविद्यालयों में सम्बद्ध हिंदी के अध्यापक अपने विषय की पूरी तैयारी करने के बाद बच्चों को पढ़ाते है, लेकिन हमारे देश में ऐसा नहीं है। विदेशों में हिंदी और संस्कृत में शोध कार्य तक हो रहे हैं।"[5]

विदेशों में हिंदी भाषा का प्रचार तो हुआ है उसके साथ-साथ हिन्दी के प्रख्यात साहित्यकारों का बहुमूल्य साहित्य स्थानीय भाषाओं में अनुवादित कर पाठ्यक्रम का हिस्सा भी बनाया गया है जो कि हिंदी भाषा के लिए गौरव की बात है। "यशपाल, मुंशी प्रेमचंद, रवीन्द्रनाथ टैगोर, फैज़ अहमद फैज़ की रचनाओं व कविताओं का चीनी भाषा में अनुवाद हो चूका है। वहाँ के कई विश्वविद्यालयों में हिंदी का अलग विभाग है। पीकिंग विश्वविद्यालय में हिंदी उर्दू व बांग्ला पढाई जाती है।"[6]

देखा जाए तो विदेशों में बसे भारतीय जो हिंदी प्रेमी हैं उनका हिंदी को विश्व भाषा बनाने में पूर्ण योगदान रहा है, वे लोग किसी न किसी रूप से हिंदी के विकास के लिए प्रयासरत रहते हैं। विभिन्न पत्रिकाओं का हिंदी में प्रकाशन करना उनकी महत्वपूर्ण उपलब्धि सिद्ध हुआ है।

सन्दर्भ :-

[1] मिश्र, प्रो. विद्यानिवास, विश्व हिंदी, राम मोहन पाठक (संप.) स्मारिका, 11विश्व हिंदी सम्मेलन, दिल्ली, विदेश मंत्रालय भारत सरकार, पृष्ठ 05

[2] चौधरी, इंद्रनाथ, हिंदी की संस्कृति और उसका विश्वरूप, राम मोहन पाठक(संप.) स्मारिका, 11विश्व हिंदी सम्मेलन, दिल्ली, विदेश मंत्रालय भारत सरकार, पृष्ठ 60

[3] शेष, डॉ. वासुदेवन, विदेशों में पल्लवित-पुष्पित हिंदी, डॉ. गंगाधर बानोड़े(संपादक), प्रवासी जगत, आगरा, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, पृष्ठ 83-84

[4] करुणाशंकर उपाध्याय, हिंदी का विश्व सन्दर्भ, दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, संस्करण 2008, पृष्ठ 12

[5] किशोर, गिरिराज, देखो जग बौराना, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, संस्करण 2010, पृष्ठ 112

[6] वही, पृष्ठ 113.